कश्मीरः अनकही कहानी

हुमरा कुरैशी

Kashmir: Ankahi Kahaani

by Humra Qureshi

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से
प्रकाशितः दिसंबर 2006
भाषाः हिंदी
मुद्रणः पेंगुइन
मूल्यः रु 150.00
आई एस बी एनः 0143100076
ऐडिशनः पेपर बैक
फ़ॉरमेटः बी
पृष्ठः 237pp
वर्गीकरणः कथेतर
क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** December 2006
- **Language:** Hindi
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs. 150.00
- **Cover Price:** Rs.150.00
- **ISBN:** 0143 100076
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 237pp
- **Classification:** Non-Fiction
- **Rights:** World

1989 के बाद से कश्मीर शायद ही कभी समाचारपत्र की सुर्ख़ियों से बाहर रहा होगा स्थानीय उग्रवादी, विदेशी आतंकवादी और भारतीय सुरक्षा बल इस क्षेत्र में निरंतर संघर्षरत हैं, जिसे कभी 'धरती के स्वर्ग' के रूप में जाना जाता था। आतंकवादी आक्रमणों, विप्लव विरोधी कार्यवाही और विदेशी हाथ होने के विषय में प्रचार, समाचार व आंकड़ों के बीच मानवीयता अक्सर खो ही जाती है। इस पुस्तक में हुमरा कुरैशी घाटी में की गई यात्राओं का वर्णन करती हैं, एवं आम कश्मीरियों से बातचीत करके यह समझने का प्रयास करती हैं कि पिछले दो दशकों के लंबे संघर्ष में उन पर क्या बीती है। वे मर्मस्पर्शी वृत्तांत प्रस्तुत करती हैं।

अत्यंत संवेदनशीलता व साहस से लिखी गई, 'कश्मीरः अनकही कहानी,' उस सत्य की अभूतपूर्व परीक्षा है जिसके विषय में हमें कम ही बताया जाता हैः कि कश्मीर में दैनिक जीवन एक ऐसा संघर्ष बनकर रह गया है, जो कभी-कभी असंभव हो जाता है।

लेखक परिचय

हुमरा कुरैशी दिल्ली की एक स्वतंत्र पत्रकार और स्तंभकार हैं। उनके लेख तथा साक्षात्कार 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया'; 'द हिंदुस्तान टाइम्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'स्टेट्समैन', 'पायनियर' और 'ट्रिब्यून' में छपते हैं। सन् 1990 से वे लगातार जम्मू-कश्मीर की यात्राएं कर रही हैं ताकि वहां की उथल-पुथल और उससे कश्मीर के आम आदमी की ज़िंदगी किस तरह प्रभावित हुई है, की रिपोर्ट दे सकें।